Q1F7J3

काला धब्बा

11

आइए सीखें – • अच्छे कार्य करने की प्रेरणा। • अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास। • शुद्ध उच्चारण • सही वाक्य रचना • विराम चिह्न • क्रिया पद का ज्ञान। • विलोम शब्द

स्वामी विवेकानन्द भारत के महान ज्ञानी थे। उनके गुरू का नाम था–'रामकृष्ण परमहंस'। एक बार विवेकानन्द एक विद्यालय में गए। वहाँ छोटे–छोटे बच्चे पढ़ते थे। उस विद्यालय के शिक्षक मन लगाकर पढ़ाते थे। अच्छी–अच्छी बातें सिखाते थे। मजेदार कहानियाँ सुनाते थे। वहाँ के सारे बच्चे बड़े ध्यान से पढ़ते थे।

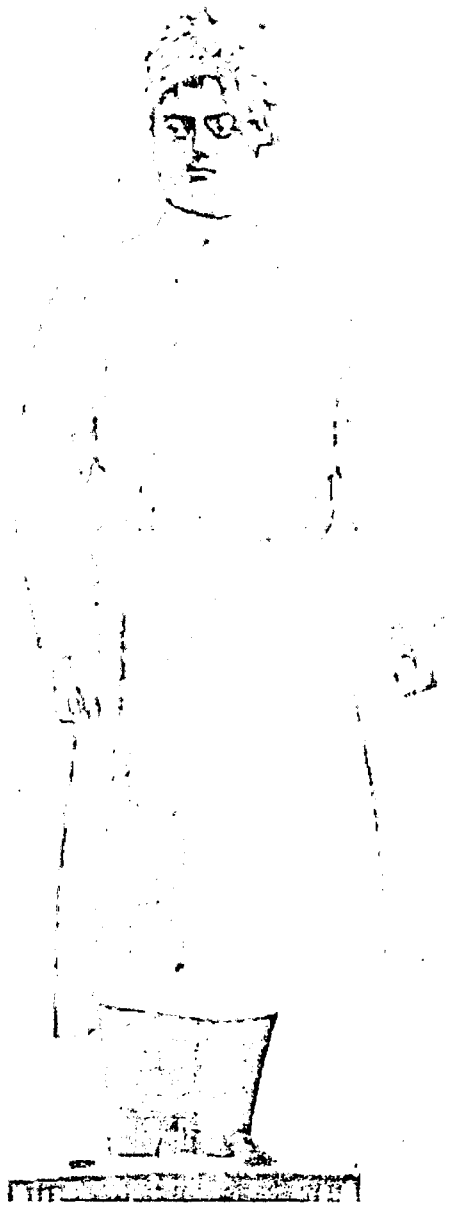

स्वामी जी को वह विद्यालय अच्छा लगा। वे कक्षा में गए। बच्चों ने खड़े होकर स्वामी जी को प्रणाम किया। उन्होंने बच्चों को आशीर्वाद दिया। इसके बाद बच्चे अपनी–अपनी जगह बैठ गए। स्वामी जी ने सोचा कि बच्चों से कुछ पूछ लेता हूँ।

स्वामी जी – प्यारे बच्चो! बताओ, 'श्री राम' कौन थे ?

सभी बच्चे–'श्रीराम' अयोध्या के राजा थे।

शिक्षण संकेत :

• शिक्षक स्थानीय स्तर के किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के विषय में चर्चा करें। • पाठ पढ़ाने से पूर्व पाण्डवों और राम, रावण के सम्बन्ध में चर्चा करें। • कठिन शब्दों की वर्तनी शुद्ध लिखने के पर्याप्त अवसर दें। • स्वामी विवेकानन्द से संबधित प्रेरक प्रसंग बच्चों को सुनाएँ।

अनुभाग अधिकारी
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

पाठ - 24
महर्षि परशुराम

आइए सीखें : • पौराणिक कथाओं का महत्व • महर्षि परशुराम का जीवन चरित्र • विशेषण, तद्भव, संधि

हमारा देश महापुरुषों का देश माना जाता है। हमारे देश ने ही सम्पूर्ण विश्व में मानवता का संदेश दिया है। समाज और परिवार के लिए ताना–बाना बुनने का कार्य भी इन्हीं महापुरूषों की देन है। ऐसे महापुरुषों की भारत वर्ष में लम्बी श्रृंखला है। महर्षि परशुराम सृष्टि के ऐसे प्रारम्भिक महापुरुषों में अग्रणी माने जाते हैं, जिन्होंने सामाजिक एकता और उत्थान के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके प्रमुख कार्यों में मानवीय सद्गुणों की प्रतिष्ठा के साथ–साथ शस्त्र और शास्त्र के शिक्षण की गणना भी की जाती है। महर्षि परशुराम को समाज द्वारा ईश्वर का अवतार भी माना जाता है। मानव जीवन में संतुलन एवं सार्थकता की निरंतरता बनाए रखना महर्षि परशुराम की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य रहा है।

पौराणिक संदर्भों के अनुसार महर्षि परशुराम का जन्म त्रेतायुग में वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) को हुआ। मान्यता अनुसार इनकी जन्मभूमि वर्तमान मध्यप्रदेश में इन्दौर के निकट 'जानापाव' पर्वत मानी जाती है। इनके पिता महर्षि जमदग्नि ओर माता रेणुका थीं। महर्षि जमदग्नि का आश्रम मॉ नर्मदा किनारे महष्मिति (वर्तमान महेश्वर) में था, जहॉ वे तपस्या करते थे। महर्षि ऋचीक इनके पितामह और महर्षि भृगु इनके प्रपितामह थे। भृगुकुल में जन्म लेने के कारण इन्हें 'भार्गव परशुराम' भी कहा जाता है। बचपन में इन्हें 'राम' कहा जाता था। भगवान शिव से शिक्षा प्राप्त करने और 'शिव' द्वारा दिए गये 'विद्युद्भि' नामक परशु धारण करने के कारण वे 'परशुराम' कहलाये।

शस्त्र और शास्त्रों में निपुण महर्षि परशुराम ने द्वापर युग में देवव्रत (भीष्म), द्रोण (द्रोणाचार्य), कर्ण आदि को शस्त्र विद्या की शिक्षा दी थी क्योंकि वे समाज में शस्त्र शिक्षा के प्रबल पक्षधर थे। साथ ही उन्हें केरल के कलरीपायट्टु की उत्तरी शैली वदक्कन कलरी (वर्तमान मार्शल आर्ट) के संस्थापक आचार्य के रूप में भी माना जाता है। गुरुकुल परम्परा के महान प्रतिनिधि महर्षि परशुराम का शक्तिशाली शरीर और शस्त्र ज्ञान उन्हें अन्याय के विरूद्ध होने वाले युद्धों में अपराजेय बनाता रहा तो उनकी शास्त्र ज्ञान सम्पन्न बुद्धि उन्हें समाज में न्याय की स्थापना के लिए सदैव प्रेरित करती रही है।

महर्षि परशुराम ने सामाजिक उत्थान की दृष्टि से तत्कालीन दक्षिण भारत के समुद्र तटवर्ती निवासरत् उपेक्षित जनसमूहों को संगठित किया, उन्हें शिक्षित और संस्कारित कर

शिक्षण संकेत– बच्चों से पौराणिक कथाओं के संबंध में चर्चा करें। पाठ में आए शब्दों का शुद्ध उच्चारण कराए। पाठ में आए अन्य पौराणिक पात्रों पर चर्चा करें।

अनुभाग अधिकारी
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

एच. एन. नेमा
संयुक्त संचालक

परिशिष्ट-3 (5)

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान द्वारा संचालित 05 आदर्श आवासीय संस्कृत विद्यालय की सूचीः-

क्र.	विद्यालय का नाम	संस्था कोड
1.	शासकीय आवासीय कन्या उ.मा.विद्यालय (गार्गी) भोपाल	2311
2.	पं. गंगाराम शास्त्री शासकीय आदर्श संस्कृत उ.मा.विद्यालय दतिया	0811
3.	शासकीय आवासीय आदर्श संस्कृत उ.मा. विद्यालय सिरोंज	2704
4	श्री हरिश्चम्बकेश्वर गहादेव शासकीय आदर्श संस्कृत विद्यालय डिण्डौरी	4801
5.	महर्षि वशिष्ट शासकीय आदर्श संस्कृत विद्यालय सोहनगढ़ रतलाम	1003

अनुभाग अधिकारी
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग